IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

डॉ0 के0 बी0 हेडगेवार के चिंतन का अध्ययन

पुनीत कुमार राजपूत

शोधार्थी कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल

डॉ. गुरेंद्र सिंह

सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

कुमाऊं यूनिवर्सिटी नैनीताल

सार

स्वातंत्र्योत्तर काल में राष्ट्रवाद की भावना पर प्रायः प्रश्न चिन्ह लगाये जाते रहे हैं क्योंकि सबका मानना है कि स्वतंत्रता प्राप्त होते ही राष्ट्रवाद की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है किन्तु यह एक भ्रामक चिन्तन है। राष्ट्र के प्रति, प्रेम, विश्वास, आस्था एवं स्वार्थ के त्याग का संयुक्त भाव है जिसका सम्बन्ध राष्ट्र के अस्तित्व से होता है। जब स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था तब यह अवधारणा एक सामान्य भाव से सबके बीच में पनप रही थी एवं आवेग तथा संवेग अपने चरम पर था। उत्तर काल में इसकी गति शनैः अवश्य हो जाती है किन्तु राष्ट्रवाद की भावना का अन्त नहीं होता । इस काल में यह अवधारणा कई धाराओं में विकसित होती दिखती है। इसी में एक धारा का विकास 1925 में जन्में संगठन राट्रीय स्वंय सेवक संघ में पोति होती है। राट्रवाद एक ऐसा विषय है जिस पर समय–समय पर विवाद होते रहे हैं। जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बात आती है तो अक्सर गलत धारणाएं होती हैं कि यह राष्ट्रवाद का विरोध करता है लेकिन यह एक मिथक है।

कुंजी शब्दः स्वातंत्र्योत्तर काल डॉ0 के0 बी0 हेडगेवार

1.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का एक हिन्दू राष्ट्रवादी, हिन्दू राष्ट्रवाद का सामूहिक रूप से सन्दर्भ, भारतीय उपमहाद्वीप की देशज आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित, सामाजिक और राजनीतिक अभिव्यक्तियों से हैं। कुछ अध्येताओं का यह वाद हैं कि हिन्दू राष्ट्रवाद एक सरलीकृत अनुवाद है, और इसका बेहतर वर्णन हिन्दू जो देश के लिए समर्पित है शब्द से होता हैं। भारतीय मूल संस्कृति के प्रति जागरूकता और उसका विचार भारतीय इतिहास में अत्यधिक प्रासंगिक बन गया जब उसकी वजह से भारतीय राजनीति को एक विशिष्ट पहचान मिली तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध प्रश्न उठाने में आधार प्रदान किया। मूल संस्कृ ति की भावना ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया जिस में सशस्त्र संर्घा, प्रतिरोधी राजनीति और गैर–हिंसक विरोध प्रदर्शन शामिल थे। इसने भारत में सामाजिक सुधार आंदोलनों और आर्थिक

सोच को प्रभावित किया। 1923 में हिन्दू राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा लोकप्रिय की गई अवधारणा हिन्दुत्व, भारत में हिन्दू राष्ट्रवाद का मुख्य रूप है। हिन्दू राष्ट्रवादी स्वयंसेवक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा हिन्दुत्व की हिमायत की जाती है, जिसे व्यापक रूप से सहबद्ध संगठन विश्व हिन्दू परिषद के साथ भाजपा के जनक संगठन के रूप में माना जाता है। अर्धसैनिक स्वयंसेवक संगठन हैं, जो व्यापक रूप से भारत के सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी का पैतृक संगठन माना जाता हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अपेक्षा संघ या आर.एस.एस. के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। बीबीसी के अनुसार संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संस्थान है प्रारंभिक प्रोत्साहन हिंदू अनुशासन के माध्यम से चरित्र प्रशिक्षण प्रदान करना था और हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए हिंदू समुदाय को एकजुट करना था। संगठन भारतीय संस्कृति और नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के आदर्शों को बढ़ावा देता है और बहुसंख्यक हिंदू समुदाय को मजबूत करने के लिए हिंदुत्व की विचारधारा का प्रचार करता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोपीय अधिकार–विंग समूहों से प्रारंभिक प्रेरणा मिली। धीरे–धीरे, आरएसएस एक प्रमुख हिंदू राट्रवादी छतरी संगठन में उभरा, कई संबद्ध संगठनों को जन्म दिया जिसने कई विचारधाराओं, दानों और क्लबों को अपनी वैचारिक मान्यताओं को फैलाने के लिए स्थापित किया।राट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर सन् 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ० केशव हेडगेवार द्वारा की गयी थी।

असंघ की स्थापना

संघ की स्थापना के 75 वां बाद सन् 2000 में प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एन०डी०ए० की मिली जुली सरकार भारत की केन्द्रीय सत्ता पर आसीन हुई। संघ शाखा किसी मैदान या खुली जगह पर एक घंटे की लगती है। शाखा में व्यायाम, खेल, सूर्य नमस्कार, समता (परेड), गीत और प्रार्थना होती है।

शाखा

शाखा प्रतिदिन एक घंटे की ही लगती है। शाखाएँ निम्न प्रकार की होती हैं। प्रभात शाखा सुबह लगने वाली शाखा को प्रभात शाखा कहते है। सायं शाखा शाम को लगने वाली शाखा को सायं शाखा कहते है। रात्रि शाखा रात्रि को लगने वाली शाखा को रात्रि शाखा कहते है। मिलन सप्ताह में एक या दो बार लगने वाली शाखा को मिलन कहते है। संघ–मण्डली महीने में एक या दो बार लगने वाली शाखा को संघ–मण्डली कहते है। पूरे भारत में अनुमानित रूप से 55,000 से ज्यादा शाखा लगती हैं। विश्व के अन्य देशों में भी शाखाओं का कार्य चलता है, पर यह कार्य राट्रीय स्वयंसेवक संघ नाम से नहीं चलता। कहीं पर भारतीय स्वयंसेवक संघ तो कहीं हिन्दू स्वयंसेवक संघ के माध्यम से चलता है।

शाखा में कार्यवाह का पद सबसे बड़ा होता है। उसके बाद शाखाओं का दैनिक कार्य सुचारू रूप से चलने के लिए मुख्य शिक्षक का पद होता है। संघ शाखा में बौद्धिक व शारीरिक क्रियाओं के साथ स्वयंसेवकों का

पूर्ण विकास किया जाता है। संघ शाखा में जो भी सदस्य स्वयं की इच्छा से आता है, वह स्वयंसेवक कहलाता हैं।

सम्बद्ध संगठन

अनेक संगठन हैं जो राट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित हैं और स्वयं को संघ परिवार के सदस्य बताते हैं। संघ अधिकांश मामलों में इन संगठनों के शुरूआती वर्षों में इनके प्रारम्भ और प्रबन्धन हेतु प्रचारकों (संघ के पूर्णकालिक स्वयंसेवक) को नियुक्त किया जाता था। संघ दुनिया के लगभग 80 से अधिक देशों में कार्यरत है। संघ के लगभग 50 से ज्यादा संगठन राष्ट्रीय ओर अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है और लगभग 200 से अधिक संघठन क्षेत्रीय प्रभाव रखते हैं। जिसमे कुछ प्रमुख संगठन है जो संघ की विचारधारा को आधार मानकर राष्ट्र और सामाज के बीच सक्रिय है।

संघ शिक्षण वर्ग

जिनमें कुछ राष्ट्रवादी, सामाजिक, राजनैतिक, युवा वर्गों के बीच में कार्य करने वाले, शिक्षा के क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में, सुरक्षा के क्षेत्र में, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में, संतो के बीच में, विदेशो में, अन्य कई क्षेत्रों में संघ परिवार के संघठन सक्रिय रहते हैं। संघ ये वर्ग बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वयंसेवकों को संघ की जानकारी तो देते ही हैं साथ–साथ समाज, राष्ट्र और धर्म की शिक्षा भी देते है।

भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में भगवा ध्वज अपनाने का पक्षधर

आरम्भ में, राट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में तिरंगे के स्थान पर भगवा ध्वज को स्वीकार करने का पक्षधर था। संघ ने, अपने मुखपत्र ऑर्गेनाइजर के 17 जुलाई 1947 दिनांक के राट्रीय ध्वज शीर्षक वाले संपादकीय में, भगवा ध्वज को राष्ट्रीय ध्वज स्वीकार करने की मांग की।

इन्हीं परिस्थितियों से युगीन इतिहास के भव्य भवन की नींव का शिलान्यास किया जाता है। यदि नींव सुदृढ़ और कुशलता से भरी जाती है तब उस पर निर्मित होने वाला भव्य भवन भी चिर स्थायी और आर्काक होता है। उस पर चमचमाते हुए उन सुखद सौधों पर स्वर्ण–शिखर सबका मन मोह लेते हैं। युग–युगों तक ऐसे भव्य और दिव्य भवन अपनी कीर्ति विकीर्ण करते रहते हैं। जहाँ परिस्थितियाँ समाज को प्रभावित करती हैं वहीं समाज भी उनका जन्मदाता बन जाता है। तत्कालीन वातावरण और विचार सभ्यता, साहित्य और संस्कृ ति के क्रमशः सोपान बनकर इतिहास का निर्माण करने में सक्षम होते हैं। आशय यह कि सभ्यता संस्कृति और साहित्य जहाँ इतिहास विनिर्मित करते हैं वहाँ इतिहास में भी इनकी उत्तमोत्तम छवियाँ विद्यमान रहती हैं। इस प्रकार इतिहास और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध सदैव बना रहता है। इसी अर्थ में इतिहास का विभिन्न सामाजिक विषयों से ही नहीं वैज्ञानिक विषयों से भी उसका सम्बन्ध अटूट सिद्ध होता है। साहित्य, मनोविज्ञान, कला, संस्कृति, भूगोल, इतिहास, पुरातत्व, विज्ञान, अर्थ शास्त्र, राजनीति, समाज शास्त्र, आध्यात्म प्रभृति विषय तिल–तण्डुल की भाँति एक दूसरे में समाविष्ट रहते हैं।

सामाजिक परिस्थितियाँ

भारत में समाज और धर्म परिवर्तन के कई दौरों से गुजरें हैं। उजाले और अंधेरें के लम्बे इतिहास में यदि प्रगति, पुनरुत्थान और सुधार के दौर आये हैं तो अवनति, विघटन, और ह्रास के युग भी आये। अंग्रेजों के प्रभुत्व के साथ ही भारत में राजनीतिक अव्यवस्था का जो दौर शुरू हुआ उससे समाज को अस्थिरता और असुरक्षा के दौर से गुजरना पड़ा और उसके अंदर एक प्रकार की जड़ता आ गई। जो कमजोर थे उन पर बलवान अपनी धौंस जमातें, गरीबों का दमन हो रहा था, राह चलतों को लूटा जा रहा था और सभी ओर अराजकता के तांडव का नृत्य हो रहा था। उस समय निःसन्देह भारतीय समाज राजनीतिक घटनाओं के प्रति उदासीन रहा और आगे कठिन राजनीतिक समय के प्रभावों को उन्होंने भाग्यवादी बनकर झेला। उनकी इस उदासीनता के बड़े दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम निकलें। भारतीय समाज और भी छोटे दायरे में सिमट गया और उनका सामाजिक जीवन अधिकाधिक जड़ और निष्क्रिय बन गया।

राजनैतिक परिस्थितियाँ

1 नवम्बर 1858 को अंग्रेजी सरकार ने एक उद्घोषणा कर कम्पनी का राज्य औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया तथा भारत के 10 करोड़ निवासियों पर सीधा प्रशासन आरम्भ किया। इस घोषणा में कम्पनी के समस्त सैनिक तथा असैनिक, पदाधिकारियों की अपने–अपने पदों पर नियुक्ति की पुष्टि की गई तथा इनके सम्बन्ध में बने हुये समस्त कानून तथा नियम जो बने हुये थे अथवा आने वाले समय में बनाए जाने थे उनके इन सब पर लागू रखने का वचन था। शनैः शनैः क्राउन का आधिपत्य स्थापित होने लगा। इसी के चलते ब्रिटिश संसद ने एक राज–उपाधि अधिनियम पारित किया जिससे महारानी विक्टोरिया को कैसर–ए–हिन्द की उपाधि से विभूषित किया। इसी समय 1876–78 में भारत में पड़े भीाण अकाल के समय दिल्ली दरबार का भव्य आयोजन भारतीयों के गले नहीं उतरा। रमेश चन्द्र दत्त का मानना है कि लगभग 50 लाख लोग 1 वर्ष में मारे गये। परन्तु विक्टोरिया की ताजपोशी ने अंग्रेजो के समक्ष भारत के दारिद्रय को नगण्य कर दिया।

1. राट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का एक हिन्दू राट्रवादी, हिन्दू राट्रवाद का सामूहिक रूप से सन्दर्भ, का अध्ययन
2.

निष्कर्ष

डॉ. हेडगेवार का मिशन सही सोच और नेक लोगों को संगठित कर समाज में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करना, उनमें देशभक्ति जगाना था. प्रतिक्रिया को देखते हुए अनुशासित, जिम्मेदार और देशभक्त नागरिक तैयार करें। डॉ. हेडगेवार ने अपनी बहुआयामी गतिविधियों से जगाया, हम अपने मिशन में काफी हद तक सफल हुए हैं।

डॉ. हेडगेवार हिंदुस्तानियों में समानता, एकता, सांस्कृतिक राट्रवाद और समरसता का संदेश फैलाना चाहते थे और योगाधारित जीवन शैली को अपनाना चाहते थे और हिंदू समाज को संगठित कर उसकी समग्र भागीदारी

सुनिश्चित करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने ध्वज पूजा, खेल, योग, सामाजिक सद्भाव और सामाजिक परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित किया।

द्विजवंदना के साथ प्रार्थना जो डॉ0 हेडगेवार के समय तक संघ की एक आवश्यक गतिविधि रही है, यह मनुय के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को लाती है। प्रार्थना मन को एकाग्र करने में मदद करती है। संघ में सामूहिक प्रार्थना पद्धति का प्रयोग किया जाता है जो सामूहिक रूप से, शुद्ध अंतःकरण से, सबके हित के लिए कही जाती है। प्रार्थना का अंतिम उद्देश्य आत्म–मूल्यांकन और आत्म–सुधार है। जैसे–जैसे अच्छे इरादे मन में आत्मसात होते हैं, वैसे–वैसे शरीर प्रतिक्रिया करता है और बदलता भी है। प्रार्थना का तात्पर्य शरीर–कोशिकाओं में शांति, उद्देश्यपूर्ण नियंत्रित गति से है। अपनी दिनचर्या में हम अपनी बहुत सी आंतरिक ऊर्जा खर्च करते हैं। भावनाओं और महत्वाकांक्षाओं के कारण अत्यधिक ऊर्जा हमारी जानकारी के बिना खर्च होती है। एक प्रार्थना इस अतिरिक्त खर्च को रोकने में मदद करती है। इस ऊर्जा को बचाना नई ऊर्जा प्राप्त करने के बराबर है। प्रार्थना के माध्यम से फिटनेस बढ़ाएं। प्रार्थना का हर सेकंड 12,50,00,000 शरीर कोशिकाओं को शुद्ध करता है। आम तौर पर, 186 दिनों के भीतर, यानी 2 रक्त चक्रों के भीतर, हमारे चयापचय में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं और परिवर्तन 7 वर्षों में पूरा हो गया है। जब बहुत से लोग एक साथ आकर सबके हित के लिए सामूहिक रूप से कहते हैं, तो वह सामूहिक प्रार्थना बन जाती है। अनुनाद के नियम के अनुसार ऐसी प्रार्थना अधिक शक्तिशाली होती है। ऐसी प्रार्थना से उत्पन्न ऊर्जा का उपयोग समाज कल्याण के लिए करना प्रार्थना को सफल बनाता है। शुद्ध प्रयासों के साथ इसे पूरा करने के लिए आप प्रतिदिन एक घंटे की निःस्वार्थ सेवा के साथ ऐसी प्रार्थना को पूरा कर सकते हैं। प्रार्थना के माध्यम से अच्छे विचार शरीर में अच्छे परिवर्तन लाते हैं और अच्छे विचारों के साथ किए गए अच्छे कर्म किसी के भविय को बेहतर के लिए बदल सकते हैं। इस प्रकार प्रार्थना से प्राप्त शक्ति का कुछ भाग दूसरों की भलाई के लिए उपयोग करना प्रार्थना का जीवन जीना हैं।

संदर्भ

1. आर0 एल शुक्ला, 1857 के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिट्रिश शासन का प्रभाव पेज0 165
2. सव्यसाची भट्टाचार्य – आधुनिक भारत का अर्थिक इतिहास 55
3. पुरी दास चोपड़ा भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहसा भाग 194
4. निर्मल कुमार चन्द्र द्वारा संकलित, शिवसुब्रमण्यम के 1938–39 के स्थिर मूल्याभावों के आँकड़ो पर
5. पुरी दास चोपड़ा भाग 3 पेज 218
6. यशपाल ग्रोवर भा० भारत का इतिहास, भारतीय रा० आन्दो० का उत्थान एवं विकास,अध्याय 33 पृ0 290

7. यशपाल ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ0 291

8. मजूमदार राय चौधरी दत्त, भारत का बृहद इतिहास, पृ0 260

9. यशपाल गेवर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा संवैधानिक विकास, पृ० 178